(1)

BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र- आठ
पुरुष-परीक्षा

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता (गेस्ट)
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Lnmu)

युद्धवीरक कथा (व्याख्यान-1) :-

प्रातः श्रुत्वा याति क्रियावानलसो भवेत् ।
युद्धवीरकथां श्रुत्वा जयमाप्नोति मानवः ॥

अर्थात् युद्धवीरक कथा सुनि कायरसभ शूर होइछ, आलसी उद्यमी बनैछ आ लोक विजय प्राप्त करैछ॥

मिथिलाक कर्णाट वंशमे उत्पन्न नान्यदेव नामक राजाक बालक मल्लदेव कुमार छलाह। ओ स्वभावहिसँ सिंहासन पराक्रमशील छलाह। पिताक उपार्जित राज्यमे उत्सुक अनुभव करैत छलाह, तथा ओ सोचलनि जे ई हमर पौरुष नहि अछि। अपर-नेताओ तेँ इएह पराजित भय जैतैछ। मुदा पिताक प्रति भक्तिओ तेँ अपन अर्जित सम्पतियहिसँ हमर बिका। जे पुत्र कर्मोआ आदि ओकरे गुणगान करैत अछि। राजकुमार मल्लदेव कुमार अपन बाहुबलसँ पुरुषार्थ करी, ई विचारि कुमार कन्नौज नामक जनपद गेलाह। जयचन्द्र नामक राजाक ओ तथा प्रिय सहचर बनिकेँ हुनक सेवामे रहि कतहिँ अधिक सम्मान भाजन बनलाह। मुदा कुमार राजाक विचार रहनि - तृष्णासँ भरल लोकक प्राण धन थिकैक, भोगीक प्राण जीवन, कामीक प्राण कामिनी तथा मनस्वीक प्राण मान थिकनि।

एकदिन राजा मल्लदेव कहलनि - देव ! अपनेक
प्रताप प्रति हम एतय आयल छलहुँ। आब आराम
जायब। राजाक आश्चर्यचकित भेलनि आ बजलाह - कुमार
अहाँक उद्देश्य कारण की भेल जे आराम जायब। कुमार
कहलनि - अपनेक आदेश क्रमशः हमरा विजय भेटैत गेल
भेल जायत। हमरा लोकनिक आगाँ के शत्रुक
निर्मित होइछ, अहाँके राज्यमे ते अन्ययुद्ध कोनो-
ताहि नहि छै। राजा प्रत्युत्तर देलनि - समुद्र पर्यन्त
एक राजस्व ग्रहण करैत छी। तखन युद्ध होयबाक
बात लैंग। कुमार कहल - देव! राजाके विजयक आनन्द
राज्यक फल भेटै, किन्तु बिना युद्धे विजय कोना?
आ तखने कुर्ने छन। राजा समझा गेल - ई कुमार
तँ केवल आराम मुँह बिकई। कजाइ जताहि
तँ जयबाह तताहि हम अभियान करब। आ
एम कुमार आमू लोक राज्य दिस विदा भेल।

Sanmeet Kumar